



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० १६४]  
No. 164]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अगस्त १५, १९८५/श्रावण २४, १९०७  
NEW DELHI, THURSDAY, AUGUST 15, 1985/SRAVANA 24, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

वित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)  
अधिसूचना

नई दिल्ली, १५ अगस्त, १९८५

फा. सं. ए-२१०२१/१०/८५-प्रश्न. III-ख. —राष्ट्रपति जी स्वतंत्रता दिवस १९८५ के अवसर पर श्री मुशमय्य भास्करन, निरीक्षक, सामाजिक तथा केंद्रीय उत्पादन-शुल्क, निरक्षरापत्नी (मरणोपरान्त) एल/एम जे. बी सिंह (२०३२२१ टी) (मरणोपरान्त) एल/एल टी. सेकेण्ड लेफ्टिनेंट एन जोषा (०२९६१ टी) तथा सहायक फार्मेट अफिसर सेठी (००१४ ई), तट रक्षक संगठन, को अपनी जान को जोखिम में डालकर उनके द्वारा दी गई असाधारण सराहनीय सेवाओं के लिए प्रशस्ति प्रमाण पत्र प्रदान करते हैं।

जिन सेवाओं के लिए प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है उनका विवरण।

१९-६-१९८४ को अधीक्षक, केंद्रीय उत्पादन-शुल्क, सामाजिक गृह, पांडिचेरी को पांडिचेरी के उत्तर में किसी स्थान पर यथेष्ट मूल्य के निषिद्ध भाल के उतारे जाने की संभावना की विश्वसनीय सूचना मिली थी। सहायक सीमाशुल्क समीक्षता कुड्डालोर तथा अधीक्षक सीमा-शुल्क गृह, पांडिचेरी से आवश्यक सूचना प्राप्त होने पर स्व. श्री भास्करन तथा श्री एम. एस. जोसेफ पाकियाराजन, निरीक्षक, समय नष्ट किए बिना महाबलीपुरम के दक्षिण तटीय क्षेत्र में गए तथा मरकतम से

लेकर प्रत्येक फिशिंग कुप्पम का दौरा किया; निकासी स्त्रियों की गहन पेट्रोलिंग का तथा अन्ततः पलायनकुप्पम में स्थिति संभाल का तथा तस्करी के निषिद्ध भाल को उतारने के प्रयासों को निष्फल किया।

तब स्वर्गीय श्री भास्करन ने निषिद्ध जलयान पर आघात करने के लिए तट रक्षक संगठन की सहायता लेने का प्रस्ताव किया। तदनुसार २० जून, १९८४ को तट रक्षक जहाजरानी गिनवन उन दो नावों को रोकने के लिए रवाना हुआ जिन पर निषिद्ध भाल होने का संदेह था। १४.०० बजे उन नावों को निषिद्ध भाल के साथ देखा गया। तट रक्षक जहाज को अपनी ओर आता देख नावों को कम गहरे जल में भागने का प्रयास किया। चूंकि जहाज कम गहरे जल में उनका पीछा न कर सका इसलिए जहाज की नाव पानी में उतारी गई तथा श्री भास्करन तट रक्षक के ३ अधिकारियों के साथ त्यारी गई नावों में से एक नाव में सवार हुए। तट रक्षक नाव को अपनी ओर आते देखते हुए दूसरी नाव ने दोनों नावों से निषिद्ध भाल तथा कामिको सहित बंध निकलने का प्रयास किया। बॉम्बिंग पार्टी द्वारा छोड़े गए नाव की जांच की तथा इसके बाद भागते हुए नाव को रोकने के लिए तब गाँव से आगे चल पड़े। परन्तु दुर्भाग्यवश बड़ी समुद्री हिलोरी के परिणामतः तट रक्षक नाव उलट गई। नाव में सवार कामिकों ने तट की ओर तैरने का प्रयास किया। इस घुबटना में श्री भास्करन की सिर में खोद लगने के कारण तथा तट रक्षक संगठन के एल/एम जे. पी. सिंह की पानी में डूबने के कारण मृत्यु हो गई। श्री भास्करन, निरीक्षक, श्री लाल पानी में डूब

गई जबकि एल/एस जे. वी. सिंह की लाश बाद में निकाल गई थी। अन्य दो नट रक्षा अधिकारियों का साथीक उपचार किया गया तथा बाद में उन्हें और अगे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया था। 15,60,900 रु. मूल्य के जिप फास्तेनर्स तथा 7,35,000 रु. मूल्य के वी. सी. आर. तथा 1,00,000 रु. मूल्य के 2 खराब लांचों सहित निषिद्ध माल को तब सहायक अधिनियम, 1962 के अन्तर्गत कार्यवाही करने के लिए कब्जे में लिया गया था। लांचों में से एक में तीन श्रीलंका के राष्ट्रिक भिखतर किए गए थे तथा उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया था।

इस प्रकार ऊपर उल्लिखित कर्मचारियों ने अपना जान का बोधन में डालकर प्रशंसनीय सहस्र, दृढ़ता तथा कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया था।

टी. एस. स्वामीनाथन, अपर सचिव

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 15th August, 1985

F. No. A-21021/10/85-Adm.III-B.—The President is pleased, on the occasion of Independence Day, 1985, to award Appreciation Certificate to Shri Subramaniam Bhaskaran, Inspector of Customs and Central Excise, Tiruchirapalli (Posthumously) L/S J. V. Singh (203221 T) (Posthumously) S/Lt. N. Joshi (02961 T) and Assistant Comdt. Anil Sethi (0014 E) of the Coast Guard Organisation for exceptionally meritorious service rendered by them when undertaking a task even at the risk of their lives.

Statement of service for which the Certificates have been awarded

On 19-6-1984, the Superintendent of Central Excise, Customs House, Pondicherry received reliable information about the possible landing of contraband goods of considerable value at any place north of Pondicherry. On receiving an urgent call from the Assistant Collector of Customs, Cuddalore and

Supdt., Customs House, Pondicherry, late Shri Bhaskaran and Shri M. S. Joseph Packiarajan, Inspectors losing no time rushed to the southern coastal area of Mahabali Pumam and undertook intensive patrol right from Markanam visiting each fishing Kupam, tapping sources and finally took position at Palayanadukuppam and thwarted attempts of smugglers to land the contraband.

Late Shri Bhaskaran then mooted the idea of seeking the assistance of Coast Guard Organisation to strike the contraband launch. Accordingly, on 20th June, 1984 the Coast Guard Ship Rani Gindan sailed to intercept the two boats suspected of carrying contrabands. At 14.00 hours, the boats with contraband were sighted. On seeing the coast guard ship approaching, the boats tried to escape into shallow waters. As the ship could not give a chase in the shallow waters, the ship's boat was lowered into the water and Shri Bhaskaran along with the 3 coast guard officers boarded one of the boats which had been abandoned. On seeing the coast guard boat approaching, the second boat with contraband and crew of both the boats tried to escape. The abandoned boat was inspected by the boarding party and thereafter proceeded at maximum speed to intercept the escaping boat. But unfortunately, the coast guard boat capsized as a result of heavy swell. The boarding personnel tried to swim towards the shore. The accident brought in its wake the death of Shri Bhaskaran, Inspector due to head injury and L/S J. V. Singh of the Coast Guard Organisation due to drowning. The body of Shri Bhaskaran, Inspector was washed ashore while that of L/S J. V. Singh was later picked up. The other 2 coast guard Officers were given first aid and later hospitalised for further treatment. Contraband goods consisting of zip fasteners valued at Rs. 15,60,900/- and VCRs valued at Rs. 7,35,000/- together with the 2 tainted launches valued at Rs. 1,00,000/- were then taken into custody for action under Customs Act, 1962. Three Sri Lankas nationals found in one of the launches were arrested and remanded to judicial custody.

Thus the above-mentioned officials had displayed exemplary courage, determination and devotion to duty at the grave risk to their lives.

T. S. SWAMINATHAN, Addl. Secy.